SUNDAY HINDUSTAN TIMES, LUCKNOW
MAY 01, 2016

Cane growers told to adopt 'drip farming'

HT Correspondent
lkoreportersdesk@hindustantimes.com

LUCKNOW: To counter water crisis, sugarcane farmers in the state are poised to use an irrigation system of Chinese origin. The state cane department has advised the cane growers, largely those in dry districts, to opt for drip irrigation method instead of growing crops using 'wasteful' flood method.

Drip method, said to have originated in China in ancient times, is turning out to be a boon in cutting down the water usage, say cane officers. "Seeing the drought like situation in Latur, Maharashtra, this year our stress is on the switch over. Drip method is a sure shot solution to the problem in UP as there are many districts here where watering crop is no less than a nightmare for cane farmers," said Vipin Kumar Dwivedi, cane commissioner, UP.

Dwivedi was here to attend the annual convention and technical expo (2016) jointly organised by ICAR– Indian Institute of Sugarcane Research, North Indian Sugarcane and Sugar Technologists' Association (NISSTA), Society for Sugar Research and Promotion here on Saturday.

Dwivedi said the drip method was much more water effective. On an average, the regular flood irrigation system needed around 2 lakh litres of water for one bigha of sugarcane crop. "But this method cuts down the water requirement by 70% or even more. One just has to set up the 'cheap' drip system and the rest would be done on its own. The water wastage is too little or almost nil in this system," he added.

WHY DRIP METHOD?

- Drip method, said to have originated in China in ancient times, cuts down the water requirement by 70% or even more.
- On an average, the regular flood irrigation system needed around 2 lakh litres of water for one bigha of sugarcane crop.

Another farming method which the cane department is propagating among the farmers under a special exercise is the trench technique. "It's another technique that can cut down the water usage by 50% compared to the existing traditional flood irrigation system," Dwivedi told HT.

"We have also fixed the targets in all the districts and are imparting special training to farmers across the state. By next year, we can expect a large chunk of the farmers to switch over," he added. In UP, there are around 42 districts where cane is cultivated. Cane department officials say the effort would surely bring down the water usage and make farmers more self reliant.

SUNDAY HINDUSTAN TIMES, LUCKNOW
MAY 01, 2016

2-DAY ANNUAL CONVENTION CONCLUDES

LUCKNOW: The two-day-long annual convention and technical expo (2016) concluded here on Saturday. Cane commissioner, UP , Vipin Kumar Dwivedi was the chief guest.

In his address he hailed the efforts put in by NISSTA and others to boost the state's cane sector. Dwivedi assured the various agencies and research institutes of complete support from the government. The address was followed by the felicitation ceremony where in the awards were given under many categories. Dr Bakshi Ram bagged the award for best innovator of the year and Chand Bihari Patodiya, director of Birla Sugar was given life time achievement award. Others too were felicitated on the occasion.

Dr Ram Moorty Singh, president, NISSTA explained the need for establishing NISSTA for the betterment of the sugarcane farmers and sugar industry in northern region of the country. Anil Kumar Shukla, secretary, NISSTA threw light on the theme of the annual convention. A show of the latest innovations done by the industry, research institutes and supporting organisations was also held . More than 250 delegates participated in this convention.

HTC

sunday pioneer

LUCKNOW | SUNDAY | MAY 1, 2016

Sugarcane role highlighted

Lucknow (PNS): Cane Commissioner Vipin Kumar Dwivedi stressed the important role of sugarcane crop in the economic development of the state. He was the chief guest at the annual convention of NISSTA and Technical Expo-2016 organised at ICAR-Indian Institute of Sugarcane Research which concluded on Saturday. Dwivedi gave the assurance that every possible efforts would be done by the state government for the welfare of sugarcane farmers, sugar mills and the public. He stated that sugarcane farmers and sugar industry were complementary to each other.

लखनऊ। रविवार • 1 मई • 2016

राष्ट्रीय सहारा

पुणे शुगर विजन कांफ्रेंस में शामिल होंगे पीएम

उत्तर भारतीय गन्ना एवं चीनी तकनीकी संघ का वार्षिक कन्वेशन सम्पन्न

पुणे में नवम्बर में 3000 देशी-विदेशी वैज्ञानिकों का होगा जमावड़ा

■ लखनऊ।

सहारा न्यूज ब्यूरो

उत्तर भारतीय गन्ना एवं चीनी तकनीकी संघ एवं आईआईएसआर के संयुक्त तत्वाधान में दो दिवसीय संघ के वार्षिक कन्वेंशन में गन्ना प्रजनन संस्थान, कोयम्बटूर के निदेशक डा. बख्शी राम को सर्वश्रेष्ठ इनोवेटर आफ इयर तथा आईआईएसआर के निदेशक डा. एडी पाठक को वर्ष 2016 के सर्वश्रेष्ठ अनुसंधानकर्ता से सम्मानित किया । गन्ना एवं चीनी आयुक्त विपिन कुमार द्विवेदी ने बिड़ला शुगर के निदेशक चाँद बिहारी पाटोदिया को लाइफ टाइम अचीवमेन्ट अवार्ड प्रदान किया। कन्वेंशन में हरियाणा, पंजाब, बिहार, उत्तराखण्ड, उप्र के गन्ना एवं चीनी उत्पादक राज्यों के वरिष्ठ शासकीय अधिकारियों, चीनी मिलों के तकनीकी अधिकारियों, मशीनरी उद्योग एवं वैज्ञानिकों में 200 लोगों ने हिस्सा लिया। निस्टा के संरक्षक नितिन देश पाण्डेय ने बताया कि बीएसआई पुणे में अन्तर्राष्ट्रीय 'शुगर विजन 2025' कांफ्रेंस नवम्बर में करायी जा रही है। इसमें विश्व से लगभग 3000 प्रतिनिधि प्रतिभाग करेंगे और इस कार्यक्रम का उद्घाटन प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी करेंगे

दो दिनी कंवेशन में भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान द्वारा विकसित गन्ने की उन्नतशील प्रजातियाँ कार्यक्रम, गन्ना आधारित फसल प्रणाली से उत्पादन की उन्नत तकनीकों पर चर्चा की गयी। गन्ने की खेती के मैकेनाइजेशन, गन्ने की खेती की जल बचत तकनीकी के लिये हुये शोध, ट्रेस मैनेजमेन्ट तकनीकी,जलवायु परिवर्तन का गन्ने की उत्पादकता पर प्रभाव जैसे शोध पत्रों पर चर्चा की गयी। आयरन नैनों पारटिकल्स की इलेक्ट्रोकेमिकल तकनीकी से चीनी व इथनाल उत्पादन बढ़ाने, देश व प्रदेश में चीनी मिलों में कोजनरेशन (बिजली उत्पादन), तकनीकी की स्थिति एवं भविष्य की सम्भावनाओं एवं जीरो डिस्चार्ज से जल प्रबन्धन प्रयासों की चर्चा की गयी। इसी प्रकार उत्तर प्रदेश के ऊर्जा संकट में चीनी मिलों से प्राप्त हो रहे सहयोग एवं स्टीम उपयोग पर विशेषज्ञों ने विचार रखे। गन्ना एवं चीनी आयुक्त विपिन कुमार द्विवेदी ने प्रदेश में गन्ने की उत्पादकता को राष्ट्रीय औसत 70 टन प्रति हैक्टर से अधिक प्राप्त करने की दिशा में किये जा रहे विभागीय प्रयासों की जानकारी दी।

संघ के अध्यक्ष व अपर गन्ना आयुक्त (से.नि.) डा. राममूर्ति सिंह ने बताया कि उत्तर भारत में चीनी उद्योग के विकास के लिये चीनी मिलों को विशेष पैकेज व न्यायोचित सुविधाओं को उठाने का निस्टा एक मंच है, यह सरकार, चीनी मिलों व गन्ना किसानों के बीच एक सेतु के रूप में काम कर रहा है।

निस्टा के सचिव अनिल कुमार शुक्ला ने बताया कि संघ ने एक वर्ष में चार बड़े एवं 2 छोटे हो चुके हैं। भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान के निदेशक डा. एडी पाठक ने वैज्ञानिकों एवं मिलों के अधिकारियों दोनों से गन्ने की उन्नतशील किस्में किसानों को बुवाई के लिए उपलब्ध कराने, गन्ने की गुणवत्ता में वृद्धि करने तथा मिलों के अधिकारियों से समय से गन्ने की पेराई प्रारम्भ करने, निर्धारित गन्ना आपूर्ति के कैलेण्डर के अनुसार किसानों के गन्ने की खरीद सुनिश्चित करने के साथ ही चीनी की गुणवत्ता पर जोर दिया। गन्ना प्रजनन संस्थान कोयम्बटूर के निदेशक डा. बख्शी राम ने बताया कि देश में अब शोध संस्थान चीनी मिलों की मांग वाली गन्ने की प्रजातियां विकसित करके देने में सक्षम है। इसके लिये चीनी मिलों को अपनी मांग पर्याप्त समय पूर्व शोध संस्थानों को बतानी पड़ेगी ताकि उन्हें प्रजातियां विकसित करने का समय मिल सके। भारतीय शर्करा संस्थान के निदेशक नरेन्द्र मोहन ने बताया कि अब गन्ने से केवल चीनी बनाना ही पर्याप्त नही है, बल्कि सहउत्पाद एवं उप सह उत्पाद उसकी खोई से, पेपर व विद्युत उत्पादन (कोजनरेशन) तथा शीरा से इथेनॉल बनाने की तकनीकी को अपनाना होगा।

• लखनऊ • रविवार • 01 मई 2016 हिन्दुस्तान

बिड़ला शुगर मिल के निदेशक को लाइफ टाइम अचीवेंट अवार्ड

लखनऊ। प्रदेश में गन्ने की उत्पादकता राष्ट्रीय औसत 70 टन प्रति हेक्टेयर से बढ़ाने के प्रयास हो रहे हैं। गन्ना आयुक्त विपिन कुमार द्विवेदी ने शनिवार को सम्मेलन में जानकारी दी।

उत्तर भारतीय गन्ना एवं चीनी तकनीकी संघ तथा आईआईएसआरके की ओर से दो दिवसीय वार्षिक सम्मेलन का शनिवार को समापन हो गया। गन्ना आयुक्त ने बिड़ला शुगर मिल के निदेशक चांद बिहारी पाटोदिया को लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड से सम्मानित किया। पाटोदिया बिड़ला शुगर मिल से 1967 से जुड़े हैं। आईआईएसआरके के निदेशक डॉ. एडी पाठक को 2016 के सर्वश्रेष्ठ रिसर्चर व गन्ना प्रजनन संस्थान कोयम्बटूर के निदेशक डॉ. बख्शीराम को सर्वश्रेष्ठ इन्नोवेटर ऑफ इयर से सम्मानित किया गया।

पायोनियर
लखनऊ, रविवार, 1 मई, 2016

यूपी एस्मा के अध्यक्ष को गन्ना आयुक्त ने किया सम्मानित

लखनऊ। उत्तर भारतीय गन्ना एवं चीनी संघ एवं आईआईएसआर के संयुक्त तत्वाधान में दो दिवसीय संघ के वार्षिक कन्वेंशन का शनिवार को समापन हुआ। इस दौरान यूपी शुगर मिल एसोसिएशन के अध्यक्ष सीबी पटौदिया को गन्ना आयुक्त ने अवार्ड से सम्मानित किया।

वार्षिक कन्वेंशन में हरियाणा, पंजाब, बिहार, उत्तराखण्ड, उप्र के गन्ना एवं चीनी उत्पादक राज्यों के वरिष्ठ शासकीय अधिकारियों, चीनी मिलों के तकनीकी अधिकारियों, मशीनरी उद्योग एवं वैज्ञानिकों के लगभग 200 लोगों द्वारा प्रतिभाग किया गया। संघ के अध्यक्ष डा. राममूर्ति सिंह नें निस्टा की आवश्यकता एवं उपयोगिता पर प्रकाश डाला। डा. सिंह ने बताया कि उत्तर भारत में चीनी उद्योग के सतत् एवं समतापूर्वक विकास के लिये चीनी मिलों को विशेष पैकेज व न्यायोचित सुविधाओं की मॉगों को सुनिश्चित कराने के लिये निस्टा मंच बनाया गया है, जो सरकार, चीनी मिलों व गन्ना किसानों मध्य न्यायोचित सामन्जस्य बनानें के लिये एक ब्रिज/पुल के रूप में कार्य कर रहा है। भरतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान के निदेशक डा. एडी पाठक ने वैज्ञानिकों एवं मिलों के अधिकारियों दोनों से गन्ने की उन्नतशील किस्में किसानों को बुवाई के लिए उपलब्ध कराने, गन्ने की गुणवत्ता में वृद्धि करनें तथा मिलों के अधिकारियों से समय से गन्नें की पेराई प्रारम्भ करनें, निर्धारित गन्ना आपूर्ति कैलेण्डर के अनुसार किसानों के गन्ने की खरीद सुनिश्चित करने के साथ ही चीनी की गुणवत्ता बढ़ानें पर जोर दिया। निस्टा के सचिव अनिल कुमार शुक्ला ने बताया कि संघ ने एक वर्ष में चार बड़े एवं 2 छोटे सेमिनारों का आयोजन कर चुका है और आगे कई जनहित में कई कार्यक्रम किये जाने प्रस्तावित है। गन्ना प्रजनन संस्थान, कोयम्बटूर के निदेशक डा. बख्शी राम ने बताया कि देश में अब शोध संस्थान चीनी मिलों द्वारा की जाने वाली मॉग के अनुसार गन्नें की प्रजातियां विकसित करके देने सक्षम है। इसके लिये चीनी मिलों को अपनी मॉग पर्याप्त समय पूर्व शोध संस्थानों को बतानी पड़ेगी ताकि उन्हें प्रजातियां विकसित करने का समय मिल सके। छोटी जोत वाले कृषकों की विभिन्न कृषि कार्यो के लिए उपकरण विकसित करके उपलब्ध कराने पर जोर दिया गया श्रमिकों की कमी के कारण तीव्रता से मशीनीकरण करने पर भी जोर दिया गया। भारतीय शर्करा संस्थान के निदेशक नरेन्द्र मोहन ने बताया कि अब गन्ने से केवल चीनी बनाना ही पर्याप्त नही है, बल्कि सहउत्पाद एवं उप-उत्पाद उसकी खोई से, पेपर व विद्युत उत्पादन (कोजनरेशन) तथा शीरा से इथेनॉल बनाने की तकनीकी को अपनाये जाने पर जोर दिया।

संडे नवभारत टाइम्स। नई दिल्ली/लखनऊ। 1 मई 2016

'किसानों को समय से करें भुगतान'

■ **एनबीटी, पीजीआई :** निष्ठा और भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ की ओर से दो दिवसीय वार्षिक सम्मेलन व तकनीकी मेले का समापन शनिवार को हो गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए गन्ना आयुक्त विपिन कुमार द्विवेदी ने कहा कि किसानों, चीनी मिलों व प्रदेश के हित में सरकार हर सम्भव प्रयास कर रही है। उन्होंने किसानों को उनकी उपज का भुगतान न करने वाली चीनी मिलों के विरुद्ध नाराजगी जाहिर करते हुए कहा कि उन्हें किसानों को तुरन्त भुगतान करना चाहिए। साथ ही भुगतान न करने की दशा में उनके खिलाफ कार्यवाही करने की चेतावनी भी दी। इस अवसर पर चीनी उद्योग के प्रमुख अधिशासी, सीबी पटौदिया को चीनी उद्योग में उल्लेखनीय सेवाओं के लिए लाइफ टाइम अचीवमेंट अवॉर्ड से सम्मानित किया गया।

कैनविज टाइम्स
रविवार, 01 मई 2016

गन्ना मूल्यों का भुगतान न करने वाली शुगर मिलों के खिलाफ जताई नाराजगी

कैनविज टाइम्स ब्यूरो

चेतावनी

- गन्ना उत्पादन 70 टन प्रति हेक्टेयर के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए अपनी उपलब्धियों को प्रयोगशाला से किसानों के खेतों पर लाएं वैज्ञानिक

लखनऊ। चीनी मिलों को सरकार द्वारा अनुदान एवं विभिन्न रियायतें दिये जाने के बावजूद, गन्ना किसानों को उनकी उपज का भुगतान न करने वाली चीनी मिलों के खिलाफ नाराजगी जताई। किसानों को तुरंत भुगतान करने की सलाह दी तथा भुगतान न करने की दशा में उनके खिलाफ कार्रवाई करने की चेतावनी भी दी। चीनी मिलों के लिए गन्ना क्षेत्र के आरक्षण को दीर्घ अवधि तक आरक्षित करने की मांग पर विचार करने का आश्वासन भी दिया।

यह आश्वासन भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, में आयोजित द्विदिवसीय वार्षिक सम्मेलन के समापन समारोह में बतौर मुख्य अतिथि गन्ना आयुक्त विपिन कुमार द्विवेदी ने दी। श्री द्विवेदी ने प्रदेश में गन्ना उत्पादकता के 70 टन प्रति हेक्टेयर के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए वैज्ञानिकों से अपनी उपलब्धियों को प्रयोगाशला से किसानों के खेतों पर ले जाने की गुजारिश की। इस अवसर पर चीनी उद्योग के प्रमुख अधिशासी, सीबी पटौदिया को चीनी उद्योग में उनकी उल्लेखनीय सेवाओं के लिए लाइफ टाइम एचीवमेंट एवार्ड से सम्मानित किया गया। श्री पटौदिया ने इस अवसर पर अपने अनुभव भी सबसे साझा किए। सम्मेलन में वैज्ञानिकों द्वारा 24 शोध पत्र प्रस्तुत किए गए। भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान के डॉ. एसके शुक्ला एवं डॉ. चन्द्र गुप्त को सर्वश्रेष्ठ शोध पत्र प्रस्तुतीकरण के लिए प्रथम एवं द्वितीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया। आयोजन सचिव डॉ.एके साह को मुख्य अतिथि ने 'उत्कृष्ट कॉन्फ्रेंस मैनेजमेंट पुरस्कार' से सम्मानित किया। कम जल आवश्यकता व बहुपेड़ी फसलों के लिए उचित प्रजातियों के विकास करने की आवश्यकता है। जलवायु परिवर्तन में विशेषकर तापमान में वृद्धि तथा कार्बन डाई ऑक्साइड सांद्रता फसल उत्पादन पर प्रतिकूल प्रभाव डाल सकती है।

राष्ट्रीय स्वरूप

लखनऊ, रविवार 01 मई, 2016

सरकार किसानों, चीनी मिलों व प्रदेशहित में कर रही काम

लखनऊ (प्रमुख संवाददाता)। भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान में आयोजित द्विदिवसीय वार्षिक सम्मेलन आज समाप्त हो गया। समापन समारोह के मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए विपिन कुमार द्विवेदी, गन्ना आयुक्त, उत्तर प्रदेश सरकार ने बताया कि प्रदेश सरकार, किसानों, चीनी मिलों व प्रदेश के हित में हर सम्भव प्रयास कर रही है। उन्होंने गन्ना किसानों व चीनी मिलों को एक दूसरे का पूरक बताते हुए एक दूसरे की समृद्धता में भागीदार होने की सलाह दी। उन्होंने चीनी मिलों को सरकार द्वारा अनुदान एवं विभिन्न रियायतें दिये जाने के बावजूद, गन्ना किसानों को उनकी उपज का भुगतान न करने वाली चीनी मिलों के विरूद्ध अप्रसन्नता दर्शाते हुए किसानों को तुरन्त भुगतान करने की सलाह दी तथा भुगतान न करने की दशा में उनके खिलाफ कार्यवाही करने की चेतावनी भी दी। उन्होंने चीनी मिलों के लिए गन्ना क्षेत्र के आरक्षण को दीर्घ अवधि तक आरक्षित करने की मांग पर विचार करने का आश्वासन भी दिया। श्री द्विवेदी ने प्रदेश में गन्ना उत्पादकता के 70 टन प्रति हे. के लक्ष्य को प्राप्त करने हेतु वैज्ञानिकों से अपनी उपलब्धियों को प्रयोगशाला से किसानों के खेतों पर ले जाने का आह्वान किया। इस अवसर पर चीनी उद्योग के प्रमुख अधिशासी, सी.बी. पटौदिया को चीनी उद्योग में उनकी उल्लेखनीय सेवाओं के लिए लाइफ टाइम एचीवमेंट एवार्ड से सम्मानित किया गया। श्री पटौदिया ने इस अवसर पर अपने अनुभव भी सबसे साझा किए। सम्मेलन में वैज्ञानिकों द्वारा 24 शोध पत्र प्रस्तुत किए गए। भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, के डॉ. एस.के. शुक्ला एवं डॉ. चन्द्र गुप्त को सर्वश्रेष्ठ शोध पत्र प्रस्तुतीकरण हेतु प्रथम एवं द्वितीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया। आयोजन सचिव, डॉ. ए.के. साह को मुख्य अतिथि ने "उत्कृष्ट कान्फ्रेन्स मैनेजमेंट पुरस्कार से सम्मानित किया। इससे पूर्व नवान्मेषकों/प्रौद्योगिकीविद इन्टरफेस सत्र की अध्यक्षता करते हुए डॉ. बक्शी राम, निदेशक, गन्ना प्रजनन संस्थान, कोयम्बटूर ने अपने परिचयात्मक उद्बोधन में गन्ना प्रजनन संस्थान, कोयम्बटूर द्वारा विकसित विभिन्न नवोन्मेषी प्रौद्योगिकी के बारे में चर्चा करते हुए बहुत बड़े क्षेत्र में गन्ने की एक प्रजाति द्वारा आच्छादित क्षेत्र, जल संसाधनों की कमी को देखते हुए गन्ने की खेती, अखिल भारतीय समन्वित शोध परियोजना के अन्तर्गत सूखारोधी प्रजातियों के मूल्यांकन के लिए अलग तन्त्र तथा परता बढाने के लिए फसल को गिरने से रोकने की आवश्यकता पर जोर दिया।